Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 03, (अगस्त, 2025)
पृष्ठ संख्या 55–56

नीलगाय और कृषिः संतुलित सह–अस्तित्व के उपाय

ए. एच. नायी एवं एन. ए. सिंह
एआईएनपीवीपीएमः कृषि पक्षिविज्ञान,
आनंद कृषि विश्वविद्यालय, आनंद, गुजरात, भारत।

Email Id: – nayiashish39@gmail.com

नीलगाय (वैज्ञानिक नामः *बोसेलाफस ट्रैगोकैमेलस*) एक शाकाहारी स्तनधारी प्राणी है, जो साम्राज्यः एनिमेलिया, संघः कॉरडेटा, वर्गः मैमेलिया, गणः आर्टियोडैक्टाइला तथा कुलः बोविडी के अंतर्गत आता है। यह एक सम–आँगुली खुरधारी प्रजाति है। वयस्क नर को बैल, जबकि मादा और बच्चों को रोजड़ी या रोजड़ा कहा जाता है। इस प्रजाति में लैंगिक द्विरूपता स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

शरीर संरचना और भिन्नताएँ

वयस्क नर की ऊँचाई लगभग 4.9 से 5.2 फीट होती है, जबकि मादा की ऊँचाई लगभग 4.3 से 4.6 फीट होती है। नर का शरीर नीले–धूसर रंग का होता है, जो घोड़े की तरह चमकदार प्रतीत होता है। मादा आकार में अपेक्षाकृत छोटी होती है और उसका रंग भूरा होता है, जिससे वह हिरण जैसी दिखती है।

नर नीलगाय की गर्दन के नीचे काले, कठोर बालों का एक गुच्छा होता है, जो दाढ़ी जैसा दिखता है। इसके अतिरिक्त, उनके होंठ, जबड़े, कानों का भीतरी भाग और पूंछ के नीचे का क्षेत्र सफेद होता है। मादाओं के चेहरे और गालों पर सफेद धब्बे होते हैं। बछड़े रंग में अपनी माँ के समान होते हैं। नर के पास दो मजबूत, शंकु आकार वाले सींग होते हैं, जो हल्के झुकाव के साथ आगे की ओर मुड़ते हैं और सिरों पर नुकीले होते हैं। दोनों लिंगों के सिर के पिछले भाग से पीठ तक एक अयाल (बालों की लट) होती है।, जिससे उनकी पीठ थोड़ी झुकी हुई प्रतीत होती है।

आवास और वितरण

नीलगाय मुख्यतः भारत के विभिन्न भागों में पाई जाती है, साथ ही नेपाल और पाकिस्तान के कुछ क्षेत्रों में भी इसके झुंड देखे जाते हैं। हालांकि यह उत्तर–पूर्वी भारत तथा कुछ पश्चिमी शुष्क क्षेत्रों में अनुपस्थित रहती है।

आवास के प्रकार

- **घास के मैदानः** नीलगाय खुले घास के मैदानों में पनपती है, जहाँ उसे भोजन और छिपने के लिए पर्याप्त जगह मिलती है। घास इसकी प्राथमिक आहार होती है।
- **कांटेदार झाड़ी वाले क्षेत्रः** यह ऐसे स्थानों में पाई जाती है जहाँ कांटेदार झाड़ियाँ, विरल वृक्ष और खुले क्षेत्र मौजूद हों।
- **जंगल के किनारेः** नीलगाय अक्सर घने जंगलों की सीमाओं पर देखी जाती है, जहाँ घास, झाड़ियाँ और छोटे पेड़ों का मिश्रण उपलब्ध होता है।
- **कृषि क्षेत्रः** जहाँ प्राकृतिक आवास नष्ट हो गए हैं या क्षीण हो चुके हैं, वहाँ नीलगाय फसलों के समीप भोजन करती देखी जाती है, जिससे किसानों और वन्यजीवों के बीच संघर्ष उत्पन्न होता है।

फसल हानि और संघर्ष

नीलगाय घास के साथ–साथ पत्तियाँ, फूल और फल भी खाती है, जैसे कि बकरी करती है। शुष्क क्षेत्रों में ये अक्सर एकेशिया और प्रोसोपीस जैसे कठोर पौधों के भाग भी खा

लेती है। इनका झुंड खड़ी फसलों पर आक्रमण करता है, जिससे भारी नुकसान होता है। इसी कारण किसान इन्हें खेतों से भगाने के प्रयास करते हैं।

नीलगाय दिन के मध्य से शाम तक सक्रिय रहती हैं और दोपहर की गर्मी में विश्राम करती हैं। ये बिना पानी के लंबे समय तक रह सकती हैं, जिससे सूखे वातावरण में भी जीवित रह पाती हैं।

एक सामान्य झुंड में लगभग 7–8 सदस्य होते हैं। एक वयस्क नर, कई मादाएँ और उनके छोटे बच्चे। कभी–कभी 20–22 नीलगायों के बड़े समूह भी देखे जाते हैं। इनकी घ्राण और दृष्टि क्षमता उत्कृष्ट होती है, जबकि श्रवण क्षमता सामान्य मानी जाती है। खतरे की स्थिति में ये हिरण की तरह लंबी छलांग लगाकर भागती हैं। विशेष बात यह है कि ये एक ही स्थान पर बार–बार मल त्याग करती हैं। संभवतः समूह की पहचान बनाए रखने हेतु।

प्रजनन व्यवहार

नीलगाय का प्रजनन काल मुख्यतः सर्दियों के महीनों (नवंबर से फरवरी) के बीच होता है। इस समय नर आपस में मादाओं के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं, प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अपने सींगों से लड़ते हैं। प्रभुत्व स्थापित करने वाले नर को मादाओं के समूह तक पहुँच प्राप्त होती है। मादाएँ लगभग 18–24 महीनों में यौन परिपक्व होती हैं और 8–9 महीनों की गर्भावस्था के पश्चात एक बछड़े को जन्म देती हैं। चूंकि प्रजनन पूरे वर्ष संभव है, अतः एक ही झुंड में विभिन्न आयु के बछड़े देखे जा सकते हैं। हालाँकि, भूमि उपयोग में परिवर्तन के कारण इनके प्राकृतिक आवास में कमी आ रही है, जिससे इनके अस्तित्व के लिए खतरे की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

संरक्षण और समाधान

वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: भारत में नीलगाय को वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 के अंतर्गत संरक्षित किया गया है। यह कानून जंगली जानवरों और उनके आवासों को सुरक्षा प्रदान करता है तथा इनके शिकार और व्यापार को नियंत्रित करता है।

फसल क्षति को कम करने की रणनीतियाँ

1. शमन उपाय:

- **संतुलन बनाना:** फसल सुरक्षा और वन्यजीव संरक्षण के बीच संतुलन जरूरी है।
- **संवेदी निरोधक:** गंध, ध्वनि या प्रकाश आधारित उपकरणों का प्रयोग।
- **बाड़बंदी:** ऊँची बाड़ या खाई खोदकर खेतों को सुरक्षित बनाना।
- **पुनर्स्थापन:** नीलगायों को वैकल्पिक क्षेत्रों में स्थानांतरित करना।

2. फसल चयन और फसल चक्र: कम स्वाद वाली फसलों का चयन और फसल चक्र बदलना ताकि खेतों की आकर्षकता कम हो।

3. मिश्रित फसल खेती और कृषि वनीकरण:

- मुख्य फसलों के साथ कम प्रिय पौधों की खेती करना, जिससे नीलगाय की रुचि कम हो।
- कृषि वनीकरण वैकल्पिक भोजन उपलब्ध करवा सकती है।

4. अप्राणघातक प्रतिरोधक उपाय: शोर उत्पन्न करने वाले यंत्र, दृश्य प्रतिकर्षक, आदि।

5. पूरक चारा क्षेत्र: खेतों से दूर नियंत्रित चराई क्षेत्र विकसित करना ताकि नीलगाय फसलों से हटकर चर सके।

(अस्वीकरण: यह लेख राष्ट्रीय और राज्य वन्यजीव संरक्षण कानूनों के अनुरूप तैयार किया गया है। इसका उद्देश्य नीलगाय और मानव के बीच सह–अस्तित्व को बढ़ावा देना है, न कि किसी भी प्रकार की हिंसा, शिकार या अवैध गतिविधि को प्रोत्साहन देना।)